ISSN: 2456–4397 RNI No.UPBIL/2016/68067 Vol-6* Issue-7* October-2021
Anthology : The Research

सूचना और संचार प्रौद्योगिकी द्वारा ग्रामीण महिलाओं में राजनीतिक जागरूकता

Through Information and Communication Technology Political Awareness Among Rural Women

Paper Submission: 10/10/2021, Date of Acceptance: 24/10/2021, Date of Publication: 25/10//2021

बद्री लाल मीणा
सहायक आचार्य,
समाजशास्त्र विभाग,
एम.जी.आर. महाविद्यालय,
अन्ता, बारां,
राजस्थान, भारत

सारांश / Abstract

20 सदी के भविष्यवादी विचारक टॉफलर (2016) ने संस्कृति की 'लहरों'की तार्किक अवधारणा के आधार स्वरूप पर तीन प्रकार के समाजों का वर्णन किया थ। लहरों के ये तीन स्परूप हैं - 'प्रथम लहर के अन्तर्गत - 10,000 वर्ष पूर्व की 'कृषि क्रांति, जिसने मानव के यायावर (घुमन्तू) जीवन, शिकार व संकनशील संस्कृतियों को सुस्थिर, सुनिश्चित धरातल प्रदान करते हुए सामाजिक, आर्थिक विकास को उन्नति दी। 'द्वितीय लहर' के अन्तर्गत 17वीं-20वीं शताब्दी के मध्य की वह 'औद्योगिक क्रांति', जिसने मानव को भौतिकवादी सुख-सुविधाा से परिपूर्ण आधुनिक जीवन दिया, 'तीसरी लहर'के रूप में 'सूचना प्रौद्योगिकी क्रांति' की कल्पना की गई थी, जो वर्तमान युग में प्रति व सशक्तता की जीती-जागती मिसाल के रूप में हमारे सामने मौजूद है। सूचना व संचार प्रौद्योगिकी (आई सी टी) के अन्तर्गत सूचना प्रौद्योगिकी के साथ संचार माध्यमों को जोड़ा गया है, जिसमें सभी प्रकार की दृश्य-श्रव्य प्रौद्योगिकी सम्मिलित है।

Tofffler (2016), the futuristic thinker of the 20th century, included three types of societies based on the character of different ideas according to culture. These three forms of waves - 'Insects of the wave - farming 10,000 years ago', agricultural revolution, human's nomadic life, Hata and Sankarshil have been developed in the form of stable, systemic business, social, economic development. Under the 'Second Wave', the 'Industrial Revolution' of the middle of the 17th-20th century, which gave man a modern life full of materialistic comforts, the 'Third Wave' was conceived as the 'Information Technology Revolution', Which is present in front of us as a living example of strength and power in the present era. Under Information and Communication Technology (ICT), communication media has been linked with information technology, which includes all types of audio-visual technology.

मुख्य शब्दः संचार, प्रोधोगिकी जागरूकता, सहभागिता, सूचना क्रांति।
Keywords:Communication, technology awareness, participation, information revolution.

प्रस्तावना

आई सी टी शब्दावली का सर्वप्रथम प्रयोग 1980 में शैक्षणिक शोधकर्ताओं द्वारा किया गया है। स्टीवेन्सन (1997) द्वारा ब्रिटिश सरकार को भेजे गए प्रतिवेदन में इसके प्रयोग के बाद वह लोकप्रिय हुआ। 21 दिसम्बर 2001 को संयुक्त राष्ट्र महासभा में एक प्रस्ताव 56/183 को मंजूरी दी गई। इस प्रस्ताव के अनुसार, मिलेनियम डवलपमेन्ट लक्ष्यों (एमजीडी) को प्राप्त करने के लिए इसे आई सी टी से जोड़ा गया जो कि अनेक प्रकार की सामाजिक समस्याओं से निपटने के साथ ही महिला जागरूकता की दिशा में कार्य करती है। इस प्रकार महिलाओं की स्थिति में सुधार हेतु वैश्विक स्तर पर अनेकों प्रयास जारी है।

आई सी टी की प्रभावी भूमिका को देखते हुए भारत सरकार ने सन् 1970 में इलेक्ट्रॉनिक्स विभाग व 1977 में राष्ट्रीय सूचना विज्ञान केन्द्र (एनआईसी) की स्थापना की, जो भारत सरकार का पहला कदम था। तब से लेकर आज तक सरकारी और गैर-सरकारी स्तर पर अनेकों प्रयास जारी है और इन प्रयासों को तीव्र गति देने का कार्य आई सी टी ने बखूबी निभाया है। इन्हीं साधन-सुविधाओं के तहत् सरकार द्वारा अरबों - खरबों व्यय किया जा रहा है क्योंकि उन्हें इसमें उतरोत्तर गुणात्मक एवं मात्रात्मक की परिवर्तित व सशक्त धारा स्पष्ट दिखाई पडने लगी है। इसे प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के इस कथन से स्पष्ट समझा जा सकता

है कि ” ई-गवर्नेस के माध्यम से गुड-गवर्नेस की तरफ जाने का रास्ता है। हम डिजिटल इण्डिया के माध्यम से आई टी के धरातल पर यूनिटी के मंत्र को साकार करना चाहते है।”

इस प्रकार आज प्रौद्योगिकी हर क्षेत्र में प्रवेश कर चुकी है और प्रत्येक क्षेत्र में बहुत ही तीव्रता से विकास करने वाली विस्तृत और विकसित प्रक्रिया के रूप में उभरी है। आज बिना प्रौद्योगिकी के जीवन की कल्पना नहीं की जा सकती और न ही विकास की। प्रोद्योगिकी से दूर रहने का तात्पर्य विकास की गति में कई गुणा पीछे रह जाना है। हर क्षेत्र आज तकनीक का सहारा ले रहा है, जिससे बहुत कम समय से अधिक से अधिक लोगों तक सेवाओं, सुविधाओं व अवसरों की पहुँच को संभव बनाया जा सके। सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी का प्रभाव आज महिलाओं में बढ़ती राजनीतिक जागरूकता को उनके वैचारिक दृष्टिकोण और संवैधानिक व लोकतांत्रिक सजगता के रूप में भी देखा जा सकता है। महिलाएं आज अपने मताधिकार के उपयोग को लेकर काफी सजग दिखाई देती है। वे अपने और समाज के उज्जवल भविष्य में वोट के मूल्य को समझने लगी है।

यह लेख राजस्थान राज्य के क्षेत्रीय अध्ययन बारां जिले की अन्ता तहसील की ग्राम पंचायत काचरी का है। जो तहसील मुख्यालय से 6 किलोमीटर की दूरी पर पूर्व दिशा में स्थित है। यहाँ की जनसंख्या 2187 के लगभग है। यहाँ की स्थानीय भाषा हाड़ौती के साथ हिन्दी बोली जाती है तथा लोगों का मुख्य व्यवसाय कृषि है। कृषि के साथ-साथ यहाँ के लोग सरकारी नौकरी भी करते हैं। यहाँ की सरपंच महिला है, जो 5 वीं पास है। गाँव में उच्च माध्यमिक विद्यालय, आँगनबाड़ी केन्द्र, राजीव गांधी सेवा केन्द्र, उप-स्वास्थ्य केन्द्र, पशु चिकित्सालय, एस.बी.आई बैंक आदि की सुविधा उपलब्ध है। गाँव में आने-जाने के लिए पक्की सड़के और यातायात के साधन उपलब्ध है। इस प्रकार गाँव में सभी मूलभूत सुविधाओं से परिपूर्ण है।

आई सी टी के प्रभाव को जानने के लिए दो सौ ग्रामीण महिलाओं से जानकारी एकत्र की गई थी। महिलाओं से उनके द्वारा प्रयुक्त संचार साधनों संबंधी जानकारी प्राप्त करने का प्रयास किया गया।

तालिका 1 समाचारों की प्रकृति

क्र.स.	समाचार	उत्तरदाता %
1	राजनीतिक	56.5
2	अन्य	28.0
3	नहीं देखती	15.5
	कुल	100.00

तालिका सख्ंया 1 के आधार पर यह देखें कि महिलाएं किस प्रकार के समाचार देखती है तो स्पष्ट होता है कि 56 प्रतिशत महिलाएं अन्य समाचारों के साथ राजनीति से संबंधित समाचारों को प्राथमिकता से देखती हैं, वहीं 28 प्रतिशत महिलाएं अन्य प्रकार के समाचारों में रूचि रखती है। लगभग 15 प्रतिशत महिलाएं समाचार देखती ही नहीं। निष्कर्षतः महिलाएं राजनीति को लेकर जागरूक है और उनकी रूचि में राजनीतिक समाचार सम्मिलित है।

तालिका 2 राजनीति में महिलाओं की भागीदारी के प्रति दृष्टिकोण

क्र.स.	दृष्टिकोण	उत्तरदाता %
1	सकारात्मक	95.0
2	नकारात्मक	05.0
	कुल	100.00

लेकिन क्या इस संवाद प्रेषण से महिलाओं की राजनीतिक स्थिति पर कोई प्रभाव पड़ा है? यह जानकारी तालिका सख्ंया 2 से स्पष्ट है। अध्ययन से संबंधी आंकड़े बताते हैं कि राजनीति में महिलाओं की भागीदारी के प्रति रूझान बढ़ा है। 95 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने राजनीति के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण को व्यक्त किया है, वही 5 प्रतिशत उत्तरदाता राजनीति में महिलाओं की भागीदारी को लेकर नकारात्मक दृष्टिकोण रखती है। ऐसा प्रतीत होता है कि महिलाएं पुरूषों

की पितृसत्तात्मक राजनीति में महिलाओं की भागीदारी को लेकर काफी आश्वासन है। वे राजनीति में सहभागी होने में रूचि रखती है, और उनका मत है कि ज्यादातार महिलाओं को राजनीति में भाग लेना चाहिए।

तालिका 3 मतदान हेतु 18 वर्ष की आयु

क्र.स.	राय	उत्तरदाता %
1	हॉ	94.0
2	कोई राय नहीं	6.0
	कुल	100.00

एक बड़ा सवाल अध्ययन के संदर्भ में यह भी उठा कि क्या मतदान के लिए स्त्रियों की आयु में परिवर्तन होना चाहिए या वर्तमान की अट्ठारह वर्ष की आयु को बनाए रखना चाहिए। तालिका सख्ंया 3 यह दर्शाती है कि 94 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने मतदान के लिए 18 वर्ष की आयु के पक्ष में अपना मत प्रस्तुत किया। ऐसी उत्तरदाताओं की संख्या बहुत कम रही। जिनमें जवाब को लेकर थोड़ा संशय रहा और उन्होंने इस विषय पर कुछ भी कह पाने में अपनी असमर्थता व्यक्त

तालिका 4 मतदान हेतु 18 वर्ष की आयु

क्र.स.	मतदान	उत्तरदाता %
1	हॉ	83.5
2	नहीं	16.5
	कुल	100.00

तालिका सख्ंया 4 मै मतदान करने के साथ क्या संबंध है? क्या वे मतदान करने के लिए उत्सुक हैं? इससे संबंधित तथ्य देखें तो स्पष्ट है कि लगभग 83 प्रतिशत उत्तरदाताओं में मतदान को लेकर काफी जागरूकता थी, जबकि 15 प्रतिशत उत्तरदाता किसी न किसी कारणवश मतदान के प्रति विमुख थी। इसके पीछे कुछ कारण उत्तरदायी रहे जिनके चलते मतदान न कर पाने की अपनी असमर्थता को उन्होंने व्यक्त किया, जैसे मतदान संबंधी उचित आयु पूर्ण न होने के कारण वोटर आईडी का न बनना, किसी-किसी ने समय के अभाव को कारण बताया। यह कहा जा सकता है कि आज महिलाएं मतदान के मूल्य को समझने लगी है और मतदान करना अपने व अपने परिवार, समाज व देश के प्रति अपना उत्तरदायित्व समझते हुए मदान प्रक्रिया में आगे आ रही है। ग्रामीण महिलाओं में प्रायः दबाव की समस्या भी सामने आती है। प्रश्न यही था कि अपनी राजनीतिक इच्छा को व्यक्त करते समय उनके उपर अपने पति या किसी रिश्तेरदार का दबाव रहता है। या नहीं।

तालिका 5 मतदान के लिए निर्णय

क्र.स.	निर्णय	उत्तरदाता %
1	स्वयं का	56.0
2	पति का	44.0
	कुल	100.00

सारणी 5 के तथ्यों से स्पष्ट है कि 56 प्रतिशत महिलाएं स्वतंत्र रूप से मतदान स्वतंत्र रूप से मतदान करती है पर यह भी देखने में आया है कि महिलाओं की एक अच्छी तादाद ऐसी भी है जो पति या परिवार के अन्य सदस्यों के कहे अनुसार मतदान करती है। यद्यति महिलाएं आज परम्परागत परिपाटी व रूढिवादी विचारों को त्यागने लगी हैं व मतदान करने संबंधी स्वयं के

निर्णयों व सूझबूझ को प्राथमिकता दे रही है लेकिन फिर भी अभी उनकी इस स्थिति में सुधार की आवश्यकता है।

तालिका 6 राजनीतिक विश्लेषण सुनना या देखना

क्र.स.	श्रेणी	उत्तरदाता %
1	हॉ	40
2	नहीं	60
	कुल	100.00

चुनाव परिणाम के बाद स्वाभाविक है कि चुनावी विश्लेषण को सुना या देखा जाए, इससे राजनीतिक समाजीकरण में मदद मिलती है। तालिका संख्या 6 से स्पष्ट है कि जहां ग्रामीण महिलाओं का एक बड़ा प्रतिशत मतदान करता है, वहीं मतदान के पश्चात उनके विश्लेषण में 40 प्रतिशत महिलाएं ही रूचि रखती है। मतदान करने के बाद परिणामों के प्रति उदासीनता का अर्थ यही है कि राजनीतिक चुनाव प्रक्रिया उनके लिए काम करने और भूल जाने जैसा है। जानकारी प्राप्त करने के बाद भी उनकी राजनीतिक रूचि प्रासंगिक है, पर इसका यह अर्थ नहीं है कि वे राजनीति में जागरूकता नहीं रखती। तकनीक के स्थान पर वे मानवीय स्रोतों का प्रयोग रकती है।

अध्ययन में सम्मिलित उत्तरदाताओं से अपने देश के प्रधानमंत्री व राज्य की मुख्यमंत्री के नाम की जानकारी रखने संबंधी सवाल के जवाब में सर्वाधिक 93 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने सही जवाब दिया जो उनकी राजनीतिक जागरूकता का प्रमाण था। निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि सूचना क्रांति ने महिलाओं को एक ऐसा मंच प्रदान किया है जो उन्हें दुनिया से जोड़ने व जानने की क्षमता को प्रदान करने के साथ मुख्य राजनीतिक पदों पर आसीन राजनेताओं का एक स्पष्ट चित्रण उनके पास मौजूद है। इसी तरह अध्ययन में सम्मिलित उत्तरदाताओं से एक अन्य प्रश्न अपने देश के प्रधानमंत्री व राज्य के मुख्यमंत्री की पार्टी की जानकारी से सबंधित सवाल को जवाब में सर्वाधिक 68 प्रतिशत ने सही व 32 प्रतिशत ने गलत उत्तर दिया। प्रदेश और देश की राजनीति के प्रसंग उन्हें प्रौद्योगिकी माध्यमों से प्राप्त हुये थे। अपने सार्वजनिक संदर्भों को उन्हांेने तकनीकी से ही प्राप्त क्रिया है।

आई सी टी से जिन ग्रामीण महिलाओं का जुड़ाव ज्यादा रहा, उनकी प्रतिक्रिया काफी सकारात्मक थी। लगभग सभी महिलाएं टीवी व मोबाइल प्रौद्योगिकी का प्रयोग कर रही थी। वहीं इंटरनेट का उपयोग करने वाली कुछ महिलाओं में विद्यार्थी व कामकाजी महिलाओं के साथ-साथ घरेलू पढ़ी लिखी महिलाएं भी थी, जो इस प्रौद्योगिकी का प्रयोग ज्ञान प्राप्ति व समस्याओं के समाधान में करती है। अधिक उम्र की तुलना में कम उम्र की महिलाओं में आई सी टी को लेकर काफी जागरूकता देखने को मिली। इसमें वर्तमान शिक्षा प्रणाली व वर्तमान संचार प्रौद्योगिकी युग के प्रौद्योगिकी साधनों तक ग्रामीण महिलाओं की पहुँच सहायक योगदान के रूप में प्रमाणिक सिद्ध हुई । जिनकी पारिवारिक पृष्ठभूमि राजनीति से सबंधित थी, वे राजनीति की तरफ ज्यादा क्रियाशील थी, क्योंकि यह देखने में आया कि पारिवारिक वातावरण महिलाओं को राजनीति संबंधी पर्याप्त जानकारी उपलब्ध करवाने तथा कहीं न कहीं ज्ञान के स्रोत के रूप में कारगर सिद्ध हो रहा है। अनेक प्रकार के संचार के माध्यमों जैसे - टेलीविजन, रेडियों, पत्र-पत्रिकाओं के द्वारा महिलायें जानकारी प्राप्त करती है। अतः महिलाएं स्वयं के प्रति काफी जागरूक हैं और अपने को सक्षम बनाने व सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक स्थिति के उन्नयन हेतु प्रयासरत है।

अध्ययन का उद्देश्य

1. सूचना और संचार प्रौद्योगिकी के बारे में जानना।
2. ग्रामीण संरचना के बारें में जानना।
3. ग्रामीण महिलाओं में राजनीतिक जागरूकता का अध्ययन करना।
4. सूचना और संचार प्रौद्योगिक का ग्रामीण महिलाओं पर प्रभाव
5. राजनीतिक सहभागिता के बारे में अध्ययन करना।

निष्कर्ष

इस प्रकार उत्तरदाताओं में राजनीतिक इकाई के स्रोत के रूप में विभिन्न प्रौद्योगिकी साधनों, जैसे - टेलीविजन, रेडियों, पत्र-पत्रिकाओं समाचार पत्र आदि संचार के माध्यमों के प्रयोग का प्रतिशत अधिकतम देखने को मिला। सूचना एवं संचार प्रोद्योगिकी द्वारा ग्रामीण क्षेत्र की महिलाओं को राजस्थान व केन्द्र सरकार की योजनाओं व जानकारी को सहजता से उपलब्ध करवाया जा रहा है और वह इन सबसे प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूप से जुड़ी है व इनका लाभ प्राप्त कर रही है। आई सी टी के फलस्वरूप महिलाओं की राजनीतिक चेतना में वृद्धि हुई है। विभिन्न वर्गो की ग्रामीण महिलाओं में राजनीतिक कार्यक्रमों में सक्रिय सहभागिता देखने को मिल रही है। पढ़ी लिखी व कार्यशील ग्रामीण महिलाएं, अशिक्षित घरेलू महिलाओं की तुलना में मताधिकार संबंधी निर्णय स्वयं लेती है।

अतः आई सी टी द्वारा ग्रामीण महिलाओं में राजनीतिक चेतना का विकास आने वाले कल के उज्जवल भविष्य के सपने को काफी हद तक साकार करती दिखाई दे रही है। आई सी टी के परिणाामस्वरूप आज महिलाओं में सवैंधानिक व लोकतांत्रिक जागरूकता देखने को मिल रही है, वे अपने मताधिकार का प्रयोग काफी सोच समझकर करने लगी है। उनकी राजनीतिक भागीदारी, जागरूकता, तार्किक कार्य क्षमताव व निर्णय प्रक्रिया को सहजता से देखा जा सकता है। महिलाएं अपनी पसंद-नापंसद व अपने अधिकारों के प्रति सचेत हो रही है। पुरूषो ंका पितृसत्तात्मक शासन कही जाने वाली 'राजनीति' में महिलाओं की सक्रिय सहभागिता राजनीति शासन में एक बहुत बड़े बदलाव की तरफ इशारा कर रही है, जो देश की राजनीति के भविष्य व महिलाओं की जीवन व्यवस्था में सकारात्मक परिवर्तन की सूचक है। आई सी टी की प्रभावी भूमिका को देखते हुए इस क्षेत्र में स्थानीय, क्षैत्रीय और राष्ट्रीय स्तर पर अनेकों प्रयास इस ओर जारी हैं। आई सी टी एक ऐसा माध्यम बन चुका है, जिससे लोगों से प्रत्यक्ष रूप से जुड़ा जा सकता है। डिजिटल इण्डिया प्लान इसका एक उदाहरण है, इसी से आई सी टी की लोकप्रियता व भविष्य की सफलता को आंका जा सकता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. *Agarwal, sunil (2003) Technology model for women's empowerment reaching the unreached, kurukshetra, ISSN : 0971-8451, 51, 7.*
2. *Alvin, Toffler (2016) Future shock and third wave author, dead at 87, CBC News, June 29.*
3. *ई गवर्नेस अनुप्रयोग, मॉडल सफलताएं सीमाएं और संभावनाएं, 8 सितम्बर 2015*
4. *http://www.vivacepanorama.com/e-govenance/.Hisamki,[internet]*
5. *htt]://www.onefivenine.com/india/villages/Ganganager/Anugarh/12-H-_3a Hisamki_4a*
6. *Lal B. Suresh, et. Al. (2006). Information Technology for Rural Development A n overview, The Economic Challenger, No. 6, V23 April-June 2004.*
7. *Sharma U. (2003) Women Empowerment though information Technology, New Delhi*